ISSN NO.2395-0692
IJAHMS International Journal of Arts, Humanities and Management Studies

दून घाटी की ऐतिहासिक गाथा

डॉ0 दयाधर सेमवाल
सहायक प्राध्यापक इतिहास विभाग *राजकीय स्नातकोत्तर महाविध्यालय अगस्त्यमूनी रूद्रप्रयाग*

''सिटी ऑफ स्कूलिंग'' के नाम से विख्यात देहरादून वर्तमान उत्तराखण्ड राज्य की राजधानी एवं प्रमुख भाहर है। उत्तर में हिमालय तो दक्षिण में शिवालिक पहाड़ियों और हरे–भरे जंगलों के मध्य स्थित यह भाहर सहारनपुर से 42 मील, रुड़की से भी 42 मील तथा पर्वतों की रानी मसूरी से 14 मील की दूरी पर स्थित है। यह भाहर 30^0–19′ उत्तरी अक्षां ा और 78^0–5′ देशान्तर पर समुद्र सतह से 2300 फीट की ऊँचाई पर स्थित है। वैदिक साहित्य के अनुसार आर्यों से पूर्व इस भूमि पर असुर जाति के लोग निवास करते थे, असुरों में कुलिन्द तथा खस प्रमुख थे, महाभारत के अनुसार कुलिन्द राजवंश गंगाद्वार (हरिद्वार) से सुदूर हिमालय के पर्वत शिखरों पर विस्तृत था। जबकि टॉलमी के अनुसार इनका साम्राज्य सतलुज, यमुना, गंगा के क्षेत्र में विस्तृत था, जिसके अन्तर्गत वर्तमान देहरादून भी पड़ता था।

पौराणिक कथा में इस नगरी की स्थिति एवं वैभव के बारे में उल्लेख है कि, मायाक्षेत्र से पि चम यमुना तक तीन योजना चौड़ा और आठ योजन लम्बा 'द्रोणक्षेत्र' परम प्रसिद्ध है। यहाँ के दर्शन मात्र से ही मनोकामना पूर्ण होती है।

इस क्षेत्र के 'द्रोण' नाम पड़ने के सम्बन्ध में उल्लेख है कि, इस स्थान पर द्रोण नामक प्रियदर्शी ब्रह्यर्शि ने पूर्वकाल में तप किया था और शिक्षा प्राप्त की इसलिए यह क्षेत्र 'द्रोणक्षेत्र' नाम से प्रसिद्ध हुआ।

पौराणिक काल में यह घाटी देवताओं और दानवों की रंगस्थली रही है। पाण्डवों ने इसी घाटी में गुप्त अरण्यवास के रूप में अपने दिन व्यतीत किये थे तथा अपने जीवन के अन्तिम काल में पाण्डव अपनी पत्नी द्रोपदी व स्वामीभक्त भवान सहित महापन्थ को जाते हुये द्रोणक्षेत्र से ही गुजरे थे। मौर्यकाल में 'द्रोणक्षेत्र' सम्राट अशोक के साम्राज्य का अंग था जिसकी पुश्टि हरिपुरा के पास कालसी में उत्कीर्ण अशोक के शिलालेख द्वारा हो जाती है। हर्शवर्धन के शासन काल में यह उसके साम्राज्य का अंग था जिसका उल्लेख प्रसिद्ध चीनी यात्री ह्वेनसांग द्वारा किया जाता है। मध्यकाल में इब्राहिम लोदी पानीपत के युद्ध में बाबर द्वारा पराजित होने पर, व महान राजपूत योद्धा राणासांगा खानवा में पराजित होने के उपरान्त अनेक राजपूत सुरक्षा की दृष्टि से यहाँ आकर बसे थे। 1654 ई0, में मुगल सम्राट शाहजहाँ ने पहली बार इस क्षेत्र को महाराजा गढ़वाल से छीनकर मुगल साम्राज्य में मिलाया था। कुछ समय पश्चात् यह क्षेत्र पुनः महाराजा गढ़वाल के अधीन आया, किन्तु औरंगजेब ने इस क्षेत्र को पुनः अपने अधिकार में लिया था। औरगंजेब के भासनकाल में पंजाब के महान योद्धा गुरू हरराय के पुत्रों में गद्दी के लिए संघर्श हुआ और सिक्ख सरदारों ने गुरू हरराय के बड़े पुत्र गुरू रामराय को उत्तराधिकारी स्वीकार न करके छोटे पुत्र हरकिशन को उत्तराधिकारी नियुक्त किया। रामराय अपने पिता के उत्तराधिकारी के नाते स्वयं को गुरू के रूप में मान्यता दिलाने में असफल रहने

ISSN NO.2395-0692
IJAHMS International Journal of Arts, Humanities and Management Studies

पर विश्राम के लिए दून आये थे। यहाँ आकर उन्होंने अपने अनुयायियों का एक सम्प्रदाय बनाया। शुरू में वे टोंस नदी के पि चम में कोडली में रहे लेकिन बाद में वह खुड़बुड़ा चले गए और वहाँ के बगल में ही धामूवाला में उन्होंने अपने नाम के एक मन्दिर का निर्माण किया। किन्तु कुछ लोगों का कहना है कि मन्दिर उनकी विधवा पंजाब कौर ने बनवाया था। पं0 हरिकृश्ण रतूड़ी गढ़वाल के इतिहास में उनकी विधवा का नाम कपेजा कुंवर लिखते हैं। प्रमुख मुगल शासक औरंगजेब गुरू रामराय से अत्यधिक प्रभावित था, औरंगजेब ने गुरू रामराय को दून घाटी में जागीर देने की व्यवस्था की तथा इस घाटी के तीन प्रमुख गाँव खुड़बुड़ा, राजपुर और चायसारी गुरूद्वारे को भेंट किए तथा गढ़वाल के तत्कालीन महाराजा फतेशाह को भी गुरूद्वारे को गाँव भेंट करने का फरमान जारी किया। महाराजा फतेशाह ने भी औरंगजेब के फरमान को स्वीकार करते हुए अपनी ओर से तीन गाँवों घनवाला, मियांवाला और पण्डितबाड़ी गुरूद्वारे को भेंट किये। इस प्रकार गुरू रामराय की उपस्थिति में यहाँ बहुत से भक्त आने लगे और 1675 ई0 से देहरा गाँव का तेजी से विकास होने लगा जो बाद में धीरे–धीरे भाहर के रूप में परिवर्तित होता गया।

इस प्रकार इस भाहर के वर्तमान नाम का आविर्भाव गुरू रामराय द्वारा अपना डेरा (आश्रम) स्थापित करने के प्श्चात् हुआ, जो प्रारम्भ में 'देहरा' के स्थान पर ''डेरा'' था परन्तु कालान्तर में अपभ्रंश होकर 'देहरा' हो गया था। स्थानीय लोगों का कहना है कि यहाँ गुरू की देह रखी गयी थी इसलिए देहरा नाम पड़ा। बाद में द्रोणी या घाटी अथवा दून के मध्य स्थित होने के कारण देहरा के साथ दून जुड़ जाने से यह स्थल 'देहरादून' नाम से प्रसिद्ध हुआ।

18वीं शताब्दी इस नगर के लिए महत्वपूर्ण थी। इस समय महाराजा गढ़वाल के प्रतिनिधि के रूप में दून–घाटी के प्र ाासक राजा अजबू कुंवर और उनकी रानी करूणावती ने अजबपुर व करनपुर गाँवों को बसाया जो आज देहरादून के बड़े–बड़े मोहल्ले हैं। वर्श 1808 ई0 में जब कैप्टेन रेपर ने देहरा का भ्रमण किया तो पाया कि यह एक बड़ा गाँव था परन्तु कालान्तर में सिक्खों, गुलाम कादिरों व मराठों के आक्रमण व लूट तथा 1803 ई0 में गोरखों के आक्रमण से इसको क्षति पहुँची। गोरखों से लड़ते हुये गढ़वाल के तत्कालीन राजा प्रद्युम्न भााह खुड़बुड़ा के मैदान में 14 मई, 1804 ई0 को वीरगति को प्राप्त हुये, इनके साथ ही इसी मैदान पर गढ़वाल का सूर्य अस्त हो गया। सम्पूर्ण गढ़वाल गोरखों के अधीन हो गया। इसके पश्चात् गढ़वाल के महाराजा सुदर्शन भााह ने ईस्ट–इण्डिया कम्पनी से गोरखों को गढ़वाल राज्य से खदेड़ने के लिए सहायता मांगी। अंग्रेजों द्वारा नेपाल सरकार के विरूद्ध युद्ध की घोशणा के उपरान्त 19 अक्टूबर, 1814 ई0 को मेजर जनरल गिलेस्पी के नेतृत्व में लगभग पंद्रह हजार सैनिकों के दस्ते ने सहारनपुर से मोहन्ड होकर देहरादून की ओर कूच किया तथा 30 नवम्बर, 1814 ई0 को गोरखा सेना को हराकर देहरा के नालापानी (कलंगा) किले पर अंग्रेजों का कब्जा हो गया और देहरा नगर सहित दून क्षेत्र अंग्रेजों के अधिकार में आ गया, अंग्रेजों द्वारा सुदर्शन शाह को आजाद गढ़वाल का नरेश बनाया गया और सुदर्शन शाह द्वारा इसके एवज में 1000 रू0 के बदले देहरादून अंग्रेजों को सौंपा गया।

वर्तमान नगर का वास्तविक विकास 1815 ई0 के बाद ही हुआ। 1815 में अंग्रेजों ने इस शहर को औपचारिक रूप से सहारनपुर जिले में सम्मलित किया। प्रशासनिक रूप से सुधार 1823

ISSN NO.2395-0692
IJAHMS International Journal of Arts, Humanities and Management Studies

ई0 में शुरू हुये जब ओनरेबल मिस्टर भोरी ने संयुक्त मजिस्ट्रेट का पदभार ग्रहण किया। मिस्टर भोरी ने भाहर में अनेक सड़कों जैसे 1823 ई0 में सहारनपुर–देहरादून– लण्डोर मार्ग, 1825 ई0 में देहरादून–रामनगर–मण्डि मार्ग एवं अनेक विकास कार्य किये और उत्साह के साथ लोगों तक पहुँचाए। मि0 भोरी के बाद 1829 ई0 में मिस्टर ट्रेल को देहरा का प्र ाासन सौंपा गया और इसी वर्श देहरा को पृथक जिले का दर्जा प्रदान किया गया। मि0 शोरी व मि0 ट्रेल द्वारा किये गये विकास कार्यों के फलस्वरूप अनेक अवकाश प्राप्त अधिकारियों ने डालनवाला व राजपुर मार्ग के मध्य भाग में अनेक आवास गृह बनाये। गढ़ी–डाकरा के समीप सैनिक छावनी की स्थापना हुई तथा स्कूलों की स्थापना की गई। देहरादून में स्थापित कॉन्वेंट स्कूल जिसकी स्थापना 1845 ई0 को हुई थी, और इसमें 100 छात्र तथा 11 से 14 धार्मिक महिलाएं रहती थी। अमेरिकन वर्ना–कुलर स्कूल की स्थापना 1854 ई0 में हुई, यह केवल लड़कों का स्कूल था। 1881 ई0 में इसमें 137 छात्र थे जिनमें 110 हिन्दू, 15 मुसलमान और 12 ईसाई थे। लड़कियों की शिक्षा को मध्यनजर रखते हुए वर्श 1859 ई0 में रैवरैंड डी0 हैरन ने एक स्थानीय ईसाई स्कूल की स्थापना की जिसमें 1881 में 134 छात्राएं छात्रावास में तथा आठ छात्राए बाहर से पढ़ने आती थी। इस स्कूल में उत्तर पश्चिम प्रांत के सभी हिस्सों और पंजाब से छात्राएं पढ़ने आती थी। एक अन्य ईसाई शैक्षणिक संस्थान 'लुधियाना अनाथ संस्था'' 1836 ई0 में लुधियाना में स्थापित की गई थी, 1841 ई0 में देहरा स्थानान्तरित की गयी। इन संस्थानों की स्थापना से देश के भिन्न–भिन्न स्थानों एवं विदे ाों से लोगों का इस 'सिटी ऑफ स्कूलिंग' नगरी में आना शुरू हुआ, फलस्वरूप देहरा के राजपुर मार्ग में व्यावसायिक केन्द्रों की स्थापना होनी भुरू हुई। व्यावसायिक क्षेत्र की प्रगति के कारण बैंकों की आवश्यकता भी महसूस होने लगी और इस आव यकतानुसार देहरादून में 1865 ई0 में इलाहाबाद बैंक ने अपनी प्रथम भााखा की स्थापना की।

देहरा के नगर प्रशासन के कार्यान्वयन के लिये नगर–पालिका की स्थापना 1850 ई0 के पूर्व ही हो चुकी थी। प्रारम्भ से ही यह पालिका प्रथम श्रेणी की पालिका थी तथा इसे मध्य हिमालयी प्रदे ाों की प्रथम नगरपालिका होने का भी गौरव प्राप्त हुआ। देहरा में स्थापित अनेक संस्थानों एवं कुशल व्यवस्थाओं का परिणाम यह हुआ कि देहरा की जनसंख्या में वर्श 1827 ई0 से 1881 ई0 तक दस गुना वृद्धि हुई (जहाँ 1827 ई0 में जनसंख्या 2126 थी वहीं 1881 ई0 में 20,683) तथा भवनों में आठ गुना वृद्धि हुई।

देहरादून के बढ़ते प्रभाव को देखते हुए देहरादून को रेलमार्ग द्वारा जोड़ने का निश्चिय किया गया। हरिद्वार से देहरादून के बीच रेलमार्ग का निर्माण 1887 ई0 से 1899 ई0 के मध्य हुआ, 1 मार्च, 1900 ई0 में इस मार्ग पर रेल का भुभारम्भ हुआ। देहरादून के रेलमार्ग से जुड़ जाने के उपरान्त उत्तर–प्रदेश के मैदानी क्षेत्र एवं अन्य प्रान्तों से यहाँ अत्यधिक प्रवासियों का आगमन हुआ। अप्रवासियों एवं प्रवासियों की वित्तीय आवश्यकताओं के मध्यनजर 1908 ई0 में पंजाब व सिन्ध बैंक तथा बड़ोदा बैंक व 1911 ई0 में स्टेट बैंक व केन्द्रीय बैंक ने अपनी शाखाओं की स्थापना देहरादून में की। 1930 ई0 में देहरादून–मसूरी मार्ग बन जाने से मसूरी आने वाले पर्यटकों की संख्या में वृद्धि हुई वहीं देहरादून में विभिन्न क्षेत्रों से आकर बसने वाले लोगों के विभिन्न संस्कृतियों का प्रादुर्भाव हुआ। इसके पश्चात् यहाँ अनेक राश्ट्रीय संस्थानों

ISSN NO.2395-0692
IJAHMS International Journal of Arts, Humanities and Management Studies

जैसे भारतीय वन अनुसन्धान 1878 ई0 में, भारतीय सैन्य अकादमी 1932 ई0 में, रॉयल इंडियन मिलिट्री कॉलेज 1 मार्च, 1922 ई0 में स्थापित हुए तथा यह स्थान भारत के उल्लेखनीय भाहरों की श्रेणी में आ गया। इसके साथ ही धार्मिक आस्था के प्रतीक, धार्मिक महत्व के प्रशासनिक कार्यालय व लोगों के लिये राम–कृश्ण आश्रम, आर्य समाज मन्दिर, मोरि ान मेमोरियल चर्च, आर0सी0चर्च0 सेन्ट जॉन्स, सेन्ट थॉमस आदि चर्चों का निर्माण हुआ। वर्श 1935 ई0 में प्रसिद्ध बैरिस्टर व वायसराय की कांउसिल के सदस्य सतीश रंजन ने देहरादून में ''दून स्कूल'' की स्थापना की, जिसे भारत का प्रथम पंजीकृत स्कूल होने का गौरव प्राप्त हुआ। इन सुविधाओं से धीरे–धीरे देहरादून यूरोपीय एवं भारतीय अवकाश प्राप्त अधिकारियों का प्रमुख आवास स्थल और आम, अमरूद, लीची तथा चाय के बागों से भरा ''बागों का शहर'' के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

सन 1947 ई0 में भारत–पाकिस्तान विभाजन के कारण हजारों भारणार्थी पाकिस्तान से आकर यहाँ बसे जिससे नगर की जनसंख्या में तीव्र वृद्धि हुई। वर्श 1941 ई0 में जहाँ शहर की जनसंख्या 78232 थी वहीं 1951 ई0 में 14,4216 हो गई। सन 1959 ई0 में तिब्बत पर चीनी आक्रमण होने से हजारों तिब्बती शरणार्थी भी इस भाहर में आकर बस गये और ''बागों का नगर'' धीरे–धीरे एक विस्तृत भाहर के रूप में विकसित हो गया। जून 1975 में स्व0 हेमवती नन्दन बहुगुणा के मुख्य मंत्रित्व काल में उत्तर–प्रदेश सरकार ने देहरादून को मेरठ कमिश्नरी से पृथक कर गढ़वाल कमि नरी के अधीन कर दिया। देहरादून नगर के जीवनकाल में महत्वपूर्ण परिवर्तन वर्श 1998 ई0 में हुआ जब देहरादून नगर पालिका को उच्चीकृत कर उत्तर–प्रदेश सरकार नगर विकास अनुभाग–7 की अधिसूचना संख्या 3561ए 19–7–98–62/97, लखनऊ, दिनांक 9 दिसम्बर, 1998 को नगर–निगम का दर्जा प्रदान किया गयौ।

संदर्भ ग्रंथ

i. एटकिंशन, ई0टी0, 1998, ''हिमालयन गजेटियर'' अनुवादक प्रकाश थपलियाल बसंत कुसुमाकर, उत्तराखण्ड प्रकाशन, हिमालय संचेतन संस्थान आदिबद्री, चमोली।

ii. स्कन्दपुराण, केदारखण्ड, 1994, प्रभात मिश्र शास्त्री हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग 12, इलाहाबाद।

iii. नेगी, प्रीतम सिंह, 1984, ''देहरादून नगर में अप्रवास के प्रतिरूप का भौगोलिक विश्लेशण,'' भू–संगम पत्रिका, अंक भूगोल विभाग इलाहाबाद विश्वविद्यालय।

iv. अधिकारी, प्रहलाद सिंह, 1990, ''हिमालय पर्यटन उद्योग'' नार्दन बुक सैंटर, नई दिल्ली।

v. वरूण, डागली प्रसाद, 1979,– ''यू0पी0 डिस्ट्रीक गजेटियर'' गवरमेंट प्रेस लखनऊ।

vi. रतूड़ी, हरिकृश्ण, 1995, ''गढ़वाल का इतिहास'' भागीरथी प्रकाशन सुमन चौक, टिहरी।

ISSN NO.2395-0692
IJAHMS International Journal of Arts, Humanities and Management Studies

vii. डबराल, शिव प्रसाद, जन्माश्टमी 2028, ''गढ़वाल का इतिहास'' (संवत् 1223–1804) बीरगाथा प्रकाशन, दुगड्डा कोटद्वार।

viii. सेमवाल, गोविन्दानन्द, 2003, ''उत्तरांचल नगर एवं नगरपालिकायें'', उत्तराखण्ड प्रकाशन, अजबपुर, देहरादून।

ix. उत्तरांचल नगर विकास साझेदारी पत्रिका, वर्श प्रवेशांक, अप्रैल, 2003, प्रकाशक, श्री भुवनेश्वरी महिला आश्रम।

x. फ्यूरर, ए0, 1891, ''मोन्यूमेन्टल एन्टीक्यूटीज ऑफ द नार्थ–वेस्ट प्रौवेन्सस एण्ड अवध,'' गवरमेंट प्रेस इलाहाबाद।

xi. नेविल, एच0आर0, 1921, ''डिस्ट्रिक गजेटियर ऑफ सहारनपुर'', गवरमेंट प्रेस लखनऊ।

www.ijahms.com